कालाहारी

हम अभी तक अरुणाचल के घर, वाना–बोगाना, एस्किमो, थार आदि के बारे में पढ़ चुके हैं। इनकी अपने यहाँ के जीवन से तुलना कर के देख चुके हैं। इनमें कहीं बरसात अधिक होती है और कहीं इतनी ठंड की सब कुछ बर्फ से ढँका रहता है। दुनिया में ऐसी भी जगहें हैं जहाँ गर्मी अधिक होती है और बारिश बहुत कम। ऐसी एक जगह है कालाहारी, चलो जानें यहाँ क्या होता है।

कालाहारी

क्या एक सूखी टहनी को देखकर बताया जा सकता है कि ज़मीन के कितने नीचे पानी छिपा होगा? क्या एक बंदर को पकड़ कर पता लगाया जा सकता है कि पानी कहाँ पर मिलेगा? हमारे यहाँ शायद ये पता लगाना इतना ज़रूरी नहीं होता। लेकिन दुनिया में ऐसी कुछ जगहें हैं जहाँ किसी तरह से पानी का पता नहीं लगा पाने का मतलब है प्यास से मर जाना।

कालाहारी ऐसी एक जगह है। कालाहारी एक लम्बा चौड़ा सूखा इलाका है। यह इतना सूखा इलाका है कि इसे रेगिस्तान भी कहा जाता है। इस रेगिस्तान में दूर–दूर तक रेतीले मैदान और कहीं–कहीं झाड़ियाँ या कँटीले पेड़ नज़र आते हैं। और नजर आते है हिरण, लकड़बग्घे, बंदर–और इधर रहने वाले !कुंग जाति के लोग।

!कुंग

!कुंग – इस शब्द को कहने के पहले जीभ को चटकारना होता है। सूखे कालाहारी में कंद–मूल और फल ढूँढकर, और जानवरों का शिकार करके रहने वाले लोग हैं !कुंग। सर्दी और बारिश के समय तो इन्हें पानी की कोई समस्या नहीं होती। परन्तु जैसे–जैसे गर्मी का मौसम आता है, कालाहारी में पानी कम होने लगता है, और फिर नज़र ही नहीं आता। ऐसे में !कुंग लोग पानी पाने के लिए पौधों और जानवरों का उपयोग करते हैं।

एक !कुंग आदमी

जड़ों से पानी

भला पौधों से पानी कैसे? रेगिस्तान में उगने वाले कई पौधे अपनी जड़ों में पानी बचा कर रखते हैं। इनमें एक ऐसा पौधा है जिसका नाम है **बि**। ऊपर से तो इसकी पतली–सी लता होती है, लेकिन इसकी जड़ बहुत

रेगिस्तान में !कुंग बस्ती

ही मोटी होती है। कई बार तो इसके कंद एक छोटे घड़े जितने बड़े होते हैं।

इस तरह की जड़ से पानी निकालना इतना आसान नहीं है। पहले तो गर्मी में लता सूख कर करीब–करीब गायब हो जाती है। फिर उसे ढूँढ कर जड़ तक पहुँचने में काफी समय लग जाता है। और अंत में जड़ एक खाली घड़े के समान नहीं बल्कि काफी ठोस और कड़ी होती है।

पानी निकालने के लिए एक चाकू को जड़ पर आड़ा रख कर घिसा जाता है। सब्ज़ी किसने पर जिस तरह हो जाती है, जड़ भी किसने पर उसी तरह हो जाती है। किसी हुई जड़ को मुट्ठी में भरकर निचोड़ो तब जाकर उसमें से निकलता है थोडा–सा पानी, जिसे !कुंग लोग सीधे ही मुँह में ले लेते हैं।

बबून बताता पानी

हो सकता है कि इसकी तुलना में बंदर को पकड़ कर पानी का पता लगाना ज़्यादा आसान हो। यहाँ पर एक तरह का बंदर होता है जिसे बबून कहा जाता है। कालाहारी में कई ऐसी गुफाएँ हैं जिनके अंदर की खाइयों में कहीं–कहीं पानी के सोते मिलते हैं। ये सोते कहाँ होंगे इसका पता करना बहुत मुश्किल है। पर इन पानी के सोतों का पता बबून बंदरों को ज़रूर रहता है। और बबूनों की आदत यह है कि अगर कोई भी जानवर या आदमी आसपास हो तो वे पानी की ओर नहीं जाते।

तो अब गर्मी के समय इन बंदरों से यह जानकारी उगलवाई कैसे जाए? इसके लिए !कुंग लोगों के पास एक अनोखा उपाय है। इस उपाय का विवरण एक यात्री ने दिया है। यह यात्री !कुंग लोगों के गाँव में कुछ समय रहने आया था। यात्री ने देबे नामक व्यक्ति को पानी खोजते हुए देखा। यात्री का इस घटना का विवरण आगे दे रहे हैं।

बबून माँ और बच्चा

देबे ने बबून पकड़ा :

!कुंग कबीले के एक व्यक्ति, देबे, को मैं ने एक अजीब हरकत करते देखा। वो एक बहुत ही संकरे से मुँह वाला घड़ा और साथ में कुछ बीज लेकर घूम रहा था। एक जगह जब उसे एक बबून दिखा तो उसने वहां एक गड्ढा खोदकर घड़े को गाड़ दिया। फिर उसने घड़े के अंदर बीज डाल दिए। बबून एक पेड़ के झुरमुट से बड़े ध्यान से सब कुछ देख रहा था। देबे यह काम करके वहां से चले जाने का स्वांग रचता हुआ थोड़ी दूर जाकर छिप गया। कुछ देर तक इधर–उधर देखने के बाद बबून पेड़ से उतरा और ज़मीन में दबे घड़े को देखने लगा। फिर उसने घड़े के अंदर हाथ डाला।

अंदर खाने के बीज थे। बबून ने उन्हें अपनी मुट्ठी में बंद कर लिए। लेकिन अब मुट्ठी बंद हो जाने के बाद घड़े के संकरे से मुंह से बबून का हाथ नहीं निकल सकता था। बबून बीज निकालने के लिए पूरा ज़ोर लगा रहा था। और बीज पकड़ कर हाथ नहीं निकल सकता था।

इसी बीच देबे चुपके से आया और झपट कर बबून के गले में रस्सी बांध दी। अब तो बबून ने खूब चिल्ल–पौ मचाई। देबे ने बबून को एक पेड़ के तने से बांध दिया। बबून खूब जम कर उछल कूद कर रहा था।

नमक और पानी

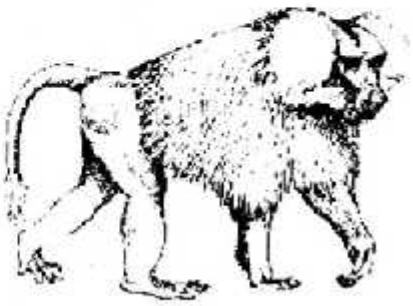

इतने में देबे ने बबून को नमक का एक बड़ा–सा ढेला दे दिया। बबून के नमक बहुत ही प्रिय है। फिर क्या, बबून अपने बंधन को भूल कर मजे से नमक खाने लग गया। जब उसने बहुत सारा नमक खा लिया तो बबून को जोर से प्यास लगी। वो गले से खसखसाहट की आवाज निकालने लग गया। लेकिन देबे काफी देर तक सब्र के साथ बबून को ताकते बैठा रहा। उसने बबून की प्यास को बहुत बढ़ने दिया। जब बबून उछलने–कूदने लग गया तब जाकर देबे को विश्वास हुआ कि अब उससे रहा नहीं जाएगा। उसने उठकर रस्सी खोल दी।

छूटते ही बबून पूरी ताकत से भागा। देबे को इसी का तो इंतज़ार था– वो भी बबून के पीछे हो लिया। बंदर सीधे एक विशाल गुफा की ओर भागा, जिसमें काफी अंदर जाने पर पानी का सोता था। बबून के साथ–साथ देबे भी पानी पीने लग गया।

देबे को पता था कि अगर वो खुद ही पानी को ढूँढने की कोशिश करता तो कभी न ढूँढ पाता। लेकिन जो आदमी बबून से ये जानकारी निकलवा सकता हो उसे खुद ढूँढने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती।

कुछ इस तरह का जीवन है कालाहारी के !कुंग लोगों का जो रेगिस्तान में पानी की कमी से भी जूझना जानते हैं। आगे कुछ लेखों में तुम्हें कालाहारी और !कुंग जाति के लोगों के बारे में और जानकारी मिलेगी।

अभ्यास

1. !कुंग जाति के लोग क्या खाते हैं?
2. !कुंग जाति के लोग पौधों से पानी कैसे लेते हैं?
3. बबून को देबे ने कैसे पकड़ा?
4. बबून की प्यास कैसे बढ़ गई?
5. कालाहारी और वाना के कबीले के रहने की जगह में क्या मुख्य अंतर है? क्या इनके जीवन में कुछ समानता भी है?

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

- कक्षा 3 भाग (2) में बन्दर, खरगोश और कछुआ, ऊंट के साथ रेगिस्तान की यात्रा पर गए थे। इन चारों में से किसे यात्रा सबसे आसान लगी/ उसका चित्र बनाओ और उसकी वे बातें बताओ जिनसे उसके लिए रेगिस्तान की यात्रा आसान हो जाती है।
- झटपट बताओ–

  क– !कुंग लोगों को पानी किस पौधे की जड़ से मिलता है?

  ख– बबून का हाथ घड़े में से क्यों नहीं निकल रहा था?
- एक ही चीज़ के लिए कई शब्दों का उपयोग किया जा सकता है– वर्षा, बारिश, बरसात, वृष्टि,..... लता..... बेल.....

  इन में से प्रत्येक का बारी–बारी इस्तेमाल करके एक–एक वाक्य बनाओ। तुम्हारे बनाए वाक्यों में से जो वाक्य वर्षा शब्द के लिए बना है, उसमें क्या हम वर्षा की जगह बारिश लिख सकते हैं? लिख कर देखो। कैसा लगा?
- नीचे कुछ शब्द झुंड दिए गए हैं। इनमें से छाँट कर समानार्थी शब्द प्रत्येक शब्द के सामने लिखो। (कुछ शब्द कहीं नहीं जाएंगे) जो शब्द बाकी बच गए उनके लिए भी एक–एक समानार्थी शब्द ढूँढो।

  सूर्य, मुसाफिर, जल, चन्द्रमा, खोज, स्नेह, मोटा, रात्री, भारी, नदी, किताब, चांद, प्रेम, पौधा, सेब, कयामत, आफ़ताब, दिन, सागर, चन्दा, खुशबू, रवि, रोशनी, लड़ाई, रात, गुम, पेय, रेल, रजनी, सहर, सुबह, प्रात:, महक, दिनकर, भास्कर, कौंपल, मरूस्थल, तालाब, गागर

रात	सुगंध
प्यार	पुस्तक
यात्री	पानी
चांद	सूरज
ढूँढ	रेगिस्तान